श्री कलराज मिश्र

माननीय राज्यपाल एवं कुलाधिपति,
राजस्थान का उद्‌बोधन

मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

का 28वां दीक्षान्त समारोह

दिनांक 22 दिसम्बर, 2020 **समय दोपहर : 12.00 बजे**

राजभवन, जयपुर

राजस्थान प्रदेश के उच्च शिक्षा मंत्री श्री भंवर सिंह जी भाटी, डॉ. सुधीर कुमार मिश्रा जी, विशिष्ट वैज्ञानिक और महानिदेशक, ब्रह्मोस, रक्षा अनुसंधान और विकास संस्थान, रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. अमेरिका सिंह, विश्वविद्यालय प्रबंध मंडल एवं अकादमिक परिषद् के सदस्यगण, समस्त अधिष्ठातागण, संकाय सदस्यगण, सम्माननीय अतिथिगण, दीक्षांत समारोह में भाग ले रहे पदक व उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियो, उनके अभिभावकगण, भाइयो और बहिनों।

आज के इस दीक्षांत समारोह में आप सभी को मैं हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देता हूं। उन शिक्षार्थियों को जिन्हें आज उपाधि और पदक मिले हैं, उनके उज्ज्वल भविष्य की मैं कामना करता हूं।

दीक्षांत शब्द का गहरा अर्थ है। दीक्षांत यानी शिक्षित। जिसने शिक्षा प्राप्त कर ली है। दीक्षांत विद्यार्थी का एक तरह से नव जीवन है। अर्जित शिक्षा और संस्कारों से विद्यार्थी इससे नए कार्य की एक तरह से समाज और अपने हित में शुरूआत करता है। एक तरह से दीक्षांत नई शुरूआत है। मैं यह मानता हूं कि विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने

के बाद जीवन जीने की नई शुरूआत ही तो करता है! इस दृष्टि से आज के इस दीक्षांत समारोह का विशेष महत्व है। जो कुछ विद्यार्थियों ने शिक्षा के अंतर्गत जीवन में अर्जित किया है, उसका व्यापक समाज, देश और विश्व–मानवता के लिए अर्थपूर्ण उपयोग जरूरी है। इसलिए आज उपाधि प्राप्त कर रहे सभी विद्यार्थियों से मैं यह उम्मीद करता हूं कि वे अपने व्यावहारिक जीवन में, हमारे समाज और देश में व्याप्त, विषमताओं, कुरीतियों को पाटने की दिशा में अपने सीखे हुए ज्ञान का सदुपयोग करेंगे।

मुझे यह जानकर सुखद लग रहा है कि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने भारतीय संविधान के महत्त्व को समझते हुए मेरी मंशा के अनुरूप अपने यहां संविधान वाटिका का निर्माण किया है। यह संविधान उद्यान बहुरंगी पुष्पों, वृक्ष लताओं आदि से सुशोभित हो साथ ही अपनी सुंदरता के साथ–साथ संविधान के प्रति विद्यार्थियों को निरन्तर जागरूक कर उन्हें देश के प्रति अपने कर्त्तव्यों का भान कराते हुए उनमें विविधता में एकता के मंत्र को जाग्रत करता रहेगा। हमारा संविधान भारतीय संस्कृति का एक तरह से जीवन दर्शन है। देश के समस्त नागरिकों को

सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक न्याय, विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, धर्म और उपासना की स्वतंत्रता, प्रतिष्ठा, समता प्राप्त करने और सबमें व्यक्ति की गरिमा और राष्ट्र की एकता सुनिश्चित करने वाली बंधुता के लिए कृतसंकल्प हमारे संविधान से नई पीढ़ी सदा जुड़ी रहे, इसी सोच से मैंने प्रदेशभर के विश्वविद्यालयों में संविधान वाटिका की स्थापना की शुरूआत की पहल की है।

संविधान लोकतांत्रिक मूल्यों में विश्वास का मूल मंत्र है। विश्वविद्यालयी शिक्षा में इससे विद्यार्थियों की निकटता इसलिए भी मैं जरूरी समझता हूं कि इससे वे देश के जिम्मेदार नागरिक रूप में और अधिक प्रभावी भूमिका निभा सकेंगे। विश्वविद्यालयीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य विद्यार्थियों को अपने, देश के प्रति और समाज के प्रति जागरूक करना भी है। जो कुछ पढ़ा गया है उसका व्यापक वर्ग के लिए उपयोग कैसे हो, इसे उन्हें अब दीक्षांत के बाद सुनिश्चित करना है।

मेरा व्यक्तिगत यह भी मानना है कि विद्यार्थी किसी भी देश और समाज का प्रकाश पुंज होते हैं। उनके पास वह आलोक है जिससे पूरा संसार वे प्रकाशित कर सकते हैं।

इसलिए मैं आज उपाधि प्राप्त करने वाले सभी विद्यार्थियों का आह्वान करता हूं कि वे अपने अर्जित ज्ञान का अधिकाधिक उपयोग राष्ट्र हित में करें।

स्वामी विवेकानंद ने कभी कहा था कि असली शिक्षा वह है जिससे मनुष्य की शक्तियों का विकास हो। शिक्षा शब्दों को रटना मात्र नहीं है। यह व्यक्ति की मानसिक शक्तियों का ऐसा विकास है, जिससे वह आजादी से कुछ तय सके। मेरा भी यहीं मानना है कि रटन्त विद्या व्यक्ति को जीवन में आगे नहीं बढ़ा सकती। शिक्षा वही उपयोगी है जिससे व्यक्ति स्थितियों–परिस्थितियों को पहचानते हुए भले–बुरे की पहचान कर सके। वही विद्या उपादेयी है जो अपने लिए ही नहीं संपूर्ण समाज के हित के लिए कार्य करने के लिए हमें प्रेरित कर सके।

मेवाड़ शौर्य और बलिदान की धरा है। यहां के राणा कुम्भा महान योद्धा ही नहीं थे बल्कि विद्यानुरागी, संगीतज्ञ और कलानुरागी भी थे। गौरीशंकर ओझा जी के लिखे मेवाड़ के इतिहास को मैंने बेहद रूचि से पढ़ा है। उसी से मैंने महाराणा कुम्भा के समय में बने दुर्ग, मंदिर और तालाबों से मेवाड़ की संस्कृति और संपन्नता को गहरे से अनुभूत किया

है। महाराणा कुम्भा के शिल्पानुराग, वैदुष्य और व्यक्तित्व ने मुझे गहरे तक प्रभावित किया है। नाट्यशास्त्र के ज्ञाता होने के साथ ही वीणावादन में भी वह कुशल थे। मैंने कहीं पढ़ा है कि अपनी पुत्री रमाबाई के विवाह स्थल के लिए चित्तौड़ दुर्ग में उन्होंने ही श्रृंगार चंवरी का निर्माण कराया था तथा चित्तौड़ दुर्ग में ही विष्णु को समर्पित कुम्भश्याम जी मन्दिर भी बनवाया।

आज इस अवसर पर मेरा विश्वविद्यालय के आचार्यों से आग्रह है कि भारतीय शिल्प, कला और स्थापत्य के साथ ही संगीत में महाराणा कुम्भा की जो देन रही है, उस पर शोध और अनुसंधान से नई पीढ़ी में ज्ञान के नवीन संस्कार के लिए भी कार्य किया जाए। नई शिक्षा नीति में विद्यार्थियों द्वारा लिए गए विषयों के साथ ही कलाओं पर पढ़ने के भी अवसर की व्यवस्था की गयी है। नई शिक्षा नीति में भारतीय संस्कृति और ज्ञान के अधिकाधिक प्रसार के लिए यह बेहद महत्वपूर्ण पहल है। सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने नवीन पाठ्यक्रमों को प्रारंभ करने के साथ ही विद्यार्थियों के विकास के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाए हैं। इसी कड़ी में महाराणा कुम्भा के कलाओं के योगदान को दृष्टिगत रखते हुए

भारतीय शिल्प शास्त्र, संगीत के प्राचीन ग्रंथों और स्थापत्य कला से जुड़े ज्ञान पर शोध और अनुसंधान के लिए भी कार्य करने की जरूरत मैं महसूस करता हूं।

मेरा इस अवसर पर विश्वविद्यालयों से यह भी आग्रह है कि वे आधुनिक ज्ञान–विज्ञान और प्रौद्योगिकी से जुड़े समाज उपयोगी विषयों का पाठ्यक्रम अंग्रेजी के साथ–साथ हिन्दी में भी तैयार करें। राष्ट्रभाषा में ज्ञान–विज्ञान और संस्कृति से जुड़ी शिक्षा यदि विद्यार्थियों में अधिकाधिक पहुंचती है तो उसका दूरगामी लाभ देश की धरोहर संरक्षण में भी निरन्तर हो सकता है।

उदयपुर झीलों और पहाड़ों की सुंदर नगरी है। यहां का जल स्थापत्य भी देश–विदेश में अपनी अलग पहचान रखता है। खूबसूरत महलों, मंदिरों के साथ ही वर्षा जल संरक्षण के लिए बनायी गयी झीलों से वर्ष पर्यन्त यहां हरियाली रहती है। मेरा विश्वविद्यालय से आग्रह है कि पहाड़ियों में वर्षा जल संरक्षण के लिए जो जतन हमारे पुरखों ने किए है, उनके अध्ययन को बढ़ावा दिया जाए। वर्षा जल संरक्षण के लिए बनी झीलों, तालाबों के साथ ही जल स्थापत्य पर शोध और अनुसंधान के भी ऐसे मौलिक कार्य किए जाने चाहिए

जिनका बड़े स्तर पर लाभ बाद में समाज को मिल सके। मेरी यह स्पष्ट मान्यता है कि शोध और अनुसंधान में नवाचार जरूरी है। ऐसे विषयों पर ही शोध–अनुसंधान होने चाहिए जिनका लाभ बाद में व्यापक समाज को मिल सके।

संस्कृत को मैं भारतीय संस्कृति का मूल मानता हूं। इस अवसर पर मेरा यह भी अनुरोध है कि संस्कृत के ऐसे ग्रंथों को सूचीबद्ध किया जाए जिनमें हमारी सांस्कृतिक परम्पराओं, कलाओं, ज्ञान–विज्ञान और आयुर्वेद से जुड़ी महत्वपूर्ण सामग्री है। ऐसे ग्रंथों का विश्वविद्यालय अपने स्तर पर हिन्दी और अंग्रेजी में अनुवाद और व्याख्याएं कराएं। मुझे ज्ञात है, अभी भी हमारी बहुत सारी ज्ञान धरोहर संस्कृत ग्रंथों में पुस्तकालयों में सुरक्षित है। उसे बाहर लाकर उसका नई पीढ़ी के लिए उपयोग किया जाना जरूरी है। इसके लिए विश्वविद्यालय कार्य करे।

मेरा यह मानना है कि हमारे शैक्षणिक मूल्य हमारी जीवन पद्धति और विश्व–कल्याण की मानवतावादी परम्पराओं के वाहक हैं। शिक्षा में मानवीय जीवन की संवेदना, करुणा, तप, उदारता, परस्पर विश्वास, सद्भाव, समन्वय की भावना के साथ ही जन उपयोगी सोच से कार्य

की भावना बहुत अधिक जरूरी है। नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति सार्वभौम भारतीय ज्ञान और विज्ञान को सतत् विकास की मूल प्रेरणा के साथ समन्वित करने वाली है। यह ज्ञान आधारित समाज के निर्माण के साथ विद्यार्थी केंद्रित है। इसलिए इसके जरिए हमारी संस्कृति और ज्ञान–विज्ञान के आलोक का अधिकाधिक प्रसार जरूरी है।

तेजी से बदलते वैज्ञानिक युग में हमें वैश्विक मानकों के साथ चलना पड़ेगा परन्तु इस बात को भी ध्यान में रखना जरूरी है कि वैश्वीकरण से हमारी संस्कृति का किसी स्तर पर नुकसान नहीं हो। इसलिए ऐसे ऊंचे आदर्श और मानदंडो की स्थापना की जानी चाहिए जो दूसरों को हमारे समान चलने के लिए प्रेरित व प्रोत्साहित करे।

मेरा यह मानना है कि नई शिक्षा नीति ऐसे ही आदर्श और मानदंड अपनाने वाली है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय ने नई शिक्षा नीति के क्रियान्वयन की दिशा में महत्त्वपूर्ण पहल की है और इसके प्रचार–प्रसार को लेकर महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण शिक्षा परिषद के साथ मिलकर कीर्तिमान बनाया है।

जब हम किसी ज्ञान के विशेष अनुशासन को अपेक्षित संरक्षण, पोषण और विकास का अवसर प्रदान करते हैं, संसाधनों से उसको प्रोत्साहन देते हैं तो कालांतर में वटवृक्ष की शाखाओं की भांति उस अनुशासन के कई आयाम अपना स्वतंत्र अस्तित्व और विस्तार प्राप्त कर लेते हैं। विश्वविद्यालय का अभिप्राय ही यह है कि वहां समस्त विद्याओं के अध्ययन और अनुशीलन की सुविधा मौजूद हो। विश्वविद्यालय में विश्व शब्द हमारे भौगोलिक वैश्विक विस्तार के साथ संपूर्णता और समग्रता का भी बोध कराता है, जहां आने वाला प्रत्येक ज्ञान–पिपासु तृप्त और आनंदित होता है।

मेरा यह मानना है कि शिक्षा में बोझिलता नहीं होनी चाहिए। विद्यार्थी सहज रोचक ढंग से गहन से गहन ज्ञान भी ग्रहण कर सके, ऐसी शिक्षा व्यवस्था का मैं सदा से ही पक्षधर रहा हूं। मुझे बताया गया है कि प्रदेश के उच्च शिक्षा जगत में राज्य सरकार द्वारा इस सबंध में आनंदम योजना को प्रोत्साहित करते हुए कार्य किया जा रहा है और इसके तहत विद्यार्थियों के व्यक्तित्व में नैतिक और चारित्रिक गुणों को पोषित किया जा रहा है। मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता है कि आपका विश्वविद्यालय अपने संबद्ध और

संघटक महाविद्यालयों के साथ इस योजना के क्रियान्वयन में भी अग्रसर है। यह बहुत सुखद है। मैं इसकी तहेदिल से सराहना करता हूं।

विश्वविद्यालय ज्ञान का प्रकाश फैलाने वाले आलोक गृह हैं। यहीं से ज्ञान का प्रकाश विद्यार्थियों के जरिए चहुंओर फैलता है। विश्वविद्यालय के आचार्य इस आलोक के संवाहक होते हैं। आचार्य का अर्थ ही है, जो अपने आचरण से आदर्श की स्थापना करे। हमारे यहां कहा गया है–

'शास्त्र प्रयोजनम् तत्व दर्शनम्'

अर्थात् ज्ञान का उद्देश्य सत्य को जानना है। आचार्य शास्त्रों के ज्ञान के सत्य को अपने विद्यार्थियों में संप्रेषित करें, तभी उसकी सार्थकता है। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के संस्थापक पंडित मदन मोहन मालवीय जी ने जब उस महान शिक्षण संस्थान की स्थापना की तब कहा था कि जीवन और प्रकाश का यह जो केन्द्र स्थापित होने जा रहा है, उससे न केवल ऐसे विद्यार्थी ही निकलेंगे जो बुद्धि में विश्व के अन्य भागों के श्रेष्ठ छात्रों के समान होंगे, वरन् जो

सदाचारपूर्ण जीवन वहन करेंगे, अपने देश से स्नेह करने में भी प्रशिक्षित होंगे।'

मैं इस दीक्षांत समारोह में आज मालवीय जी के इन शब्दों को दोहराते हुए कहना चाहता हूं कि सभी विश्वविद्यालय श्रेष्ठ शिक्षा प्राप्त छात्र ही तैयार नहीं करें बल्कि ऐसे भावी नागरिक भी समाज को दें जो अपने ज्ञान का उपयोग देश की समृद्धि और संपन्नता में करने के लिए प्रतिबद्ध हों।

इस अवसर पर मैं आज उपाधि व पदक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों, उनके माता–पिता, अभिभावकों व शिक्षकों को पुनः बधाई देता हूं और आशा करता हूं कि वे इस दीक्षांत समारोह को शिक्षा की समाप्ति नहीं मानते हुए निरंतर विद्यार्जन और सीखने की प्रक्रिया को जारी रखते अपने सीखे हुए ज्ञान का समाज के हित में उपयोग करेंगें।

पुनः सभी को मेरी स्वस्तिकामना। आप सभी का आभार। जय हिंद!